बचाव के उपाय

- आस-पास के क्षेत्रों में जब भी मस्तिष्क ज्वर का टीका लग रहा हो, तो 01-15 वर्ष तक के सभी बच्चों को टीका अवश्य लगवायें।
- अपने आस-पास मच्छरों को पनपने से रोकने हेतु उपाय करें। जमा पानी में मिट्टी के तेल, चूना, ब्लीचिंग पाउडर आदि का छिड़काव करें।
- प्रयास करें कि किसी को भी खास कर बच्चों को मच्छर न काटें। इसके लिए बच्चों को शाम होने के पहले से ही पूरा कपड़ा पहनायें।
- मच्छरों से बचाव हेतु रात में मच्छरदानी अवश्य लगाकर सोयें।
- अगर मच्छरदानी न लगा पायें तो नीम का तेल शरीर पर लगाकर सोयें। जानवरों/पशुओं को रखने की जगह अपने रहने की जगह से थोड़ा दूर व साफ-सुथरा रखें।
- खाने-पीने में साफ पानी का प्रयोग करें। पीने के पानी में क्लोरीन की गोली या
- ब्लीचिंग पाउडर डालकर अथवा उबाले हुए पानी को पीयें। ध्यान रहे इण्डिया मार्का II हैण्डपम्प के पानी में भी उपरोक्त सावधानियाँ अवश्य अपनायें।
- हैण्डपम्प के आस-पास पानी न इकट्ठा होने दें।
- मल विसर्जन समुचित व सुरक्षित शौचालय में करें।
- खुले में शौच न करें।
- शौच के बाद तथा खाने से पहले साबुन से हाथ धोना न भूलें।

बच्चे हमारा भविष्य हैं, इनके साथ खिलवाड़ न करें। जापानी इन्सेफेलाइटिस व इण्टरोवायरस से बचाव जरूरी है।

संयोजन

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप

पोस्ट बाक्स नं० 60, गोरखपुर-273001

सहयोग

क्रिश्चियन एड, नई दिल्ली

जापानी इन्सेफेलाइटिस (मस्तिष्क ज्वर)

सावधानी ही बचाव है...

गोरखपुर जिला तथा उसके समीपवर्ती बस्ती, गोरखपुर मण्डलों के जिले, लखनऊ तथा पूर्वी वं पश्चिमी बिहार के जिलों में विगत कई वर्षों से जापानी इन्सेफेलाइटिस रोग तथा उससे प्रभावित होने वाले रोगियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश, बिहार व नेपाल के तराई क्षेत्र के लोग ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। ध्यातव्य है कि ये सभी इलाके बाढ़ एवं जल-जमाव से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र हैं, जहाँ महीनों पानी जमा रहता है और जिसका दूरगामी प्रभाव कई रूपों में लोगों को प्रभावित करता है। प्रारम्भिक दिनों में सिर्फ बरसात में होने वाली इस बीमारी से अब वर्ष भर लोग प्रभावित होते हैं। इससे प्रभावित अधिकांश लोगों की मृत्यु हो जाती है। जो रोगी ठीक हो जाते हैं, उनमें भी मस्तिष्क पर प्रभाव होने के कारण वे अपंग हो जाते हैं। अत: यह एक ऐसी घातक बीमारी है, जिससे आज इस क्षेत्र में ही नहीं बल्कि दुनिया में एक अनुमान के अनुसार 45000 लोग प्रतिवर्ष पीड़ित हैं।

यह बीमारी कैसे होती है-

- जापानी इन्सेफेलाइटिस धान के खेतों में तेजी से पनपने वाले क्यूलेक्स मच्छरों के काटने से फैलता है। ये मच्छर यदि सुअर अथवा भैंस या अन्य किसी जानवर को काटने के बाद मनुष्यों को काटते हैं, तो इस बीमारी के होने की संभावना सर्वाधिक रहती है।
- ऐसे क्षेत्रों में जहाँ धान के खेत नहीं है, परन्तु जल-जमाव की अधिकता है, वहाँ पर भी प्रदूषित पानी पीने से यह बीमारी होने लगी है।

जापानी इन्सेफेलाइटिस एक गंभीर व घातक बीमारी है-

- इसके इलाज में लापरवाही बरतने से 20 से 30 प्रतिशत रोगियों की मृत्यु हो जाती है।
- 30 से 40% तक मरीज बीमारी ठीक होने के बाद अपंगता के शिकार हो सकते हैं।

ध्यान दें ! **आज जापानी इन्सेफेलाइटिस के रोगियों में से लगभग 50 प्रतिशत रोगी प्रदूषित जल पीने के कारण इण्टरोवायरस नामक बीमारी से ग्रसित हो रहे हैं।**

यह भी याद रखें कि इस बीमारी का सर्वाधिक प्रकोप 01-15 वर्ष के बच्चों में होता है। अत: इन्हें बचायें।

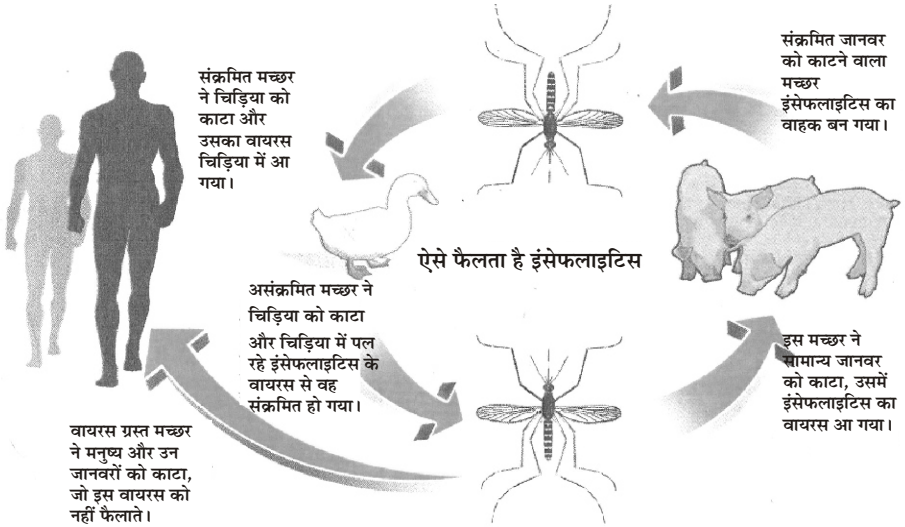

इन्सेफेलाइटिस प्रसार चक्र

बीमारी के लक्षण

- अचानक होने वाले तेज बुखार के साथ-साथ रोगी को मूर्छा आना।
- रोगी को थोड़ी-थोड़ी देर में झटके आना।
- रोगी के व्यवहार में अचानक से परिवर्तन आना।
- तेज सिर दर्द के साथ गर्दन में अकड़न।

यदि किसी को भी उक्त लक्षण दिखाई दें, तो मरीज को तुरन्त स्वास्थ्य केन्द्र या अस्पताल पर पहुँचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। इस दौरान-

- रोगी को पीठ के बल न लिटाकर दायें अथवा बायें करवट ही रखते हुए गर्दन सीधी रखनी चाहिए ताकि सांस आसानी से ले सके।
- रोगी को ऐसे साधन से ले जाना चाहिए, जिससे उसे कम झटके लगें।
- रोगी को यदि बुखार बहुत अधिक है, तो उसके शरीर को सादे पानी से बार-बार पोछते रहें।
- सर पर ठण्डे पानी की पट्टी रखें।
- बिना डाक्टर की सलाह के रोगी को कोई भी दवा (विशेषकर एण्टीबायोटिक) न दें।